

जल परिवहन की नई संभावनाएं



शुरू हो जाएगी। रो-रो
सर्विस भी शुरू करने की
योजना है, जिसके तहत
लोग कार जैसे निजी
साधनों के साथ गंतव्य तक
सहजता से पहुंच सकेंगे।
हालांकि अब तक 'रिवर
इन्फारमेशन सिस्टम'
विकसित नहीं हो पाया है।
बजट की कमी नहीं हुई तो
यह सपना भी पूरा होने में
कम से कम चार साल तो
लग ही जाएंगे। सड़क व रेल
मार्ग के मुकाबले जल मार्ग
से ढुलाई का खर्च छह
फीसद कम हो जाएगा।

अभी तो राष्ट्रीय जल मार्ग
की शुरुआत वाराणसी से
हलिद्या के बीच की गई है।
वाराणसी, हलिद्या व
झारखण्ड के साहबगंज में
मल्टी टर्मिनल भी बनाया
जाएगा। पचास से ज्यादा
छोटे टर्निमल व फरक्का में
छह सौ करोड़ की लागत से
गेट बनाया जाएगा ताकि
मालों की ढुलाई के साथ ही
जलपोतों का संचालन
बख्बूबी किया जा सके।
सरकार चाहती है कि गंगा
में न केवल मालवाहक
बल्कि आलीशान कूज भी
चलें। देश के बड़े उद्योगपति
अपना कूज खरीदें और उसी
कूज से गंगा में उतरें।

ते पच्चीस सालों में जल परिवहन को विकसित करने के लिए नौ समितियां गठित की गईँ। सभी समितियों ने जल मार्ग के विकास पर मुहर तो लगाई लेकिन संभवित खतरों की ओर इशारा भी किया। लेकिन जल मार्ग में आने वाली बाधाओं से किस तरह से निजात पाई जाए, इस दिशा में कोई ठोस पहल नहीं की गई। अब इस दिशा में नई शुरुआत की गई है। वर्तमान सरकार ने एक सौ ब्यारह नदियों को राष्ट्रीय जल मार्ग घोषित करने के लिए एक महत्वपूर्ण विधेयक इस साल पारित कराया है। केंद्र सरकार ने दावा किया है कि कुल बीस हजार किलोमीटर लंबे नदी किनारों व साढ़े सात हजार किलोमीटर लंबे समुद्र तट का विकास वह करेगी। इस क्रम में बीते दिनों वाराणसी से मारुति सुजुकी की कारों व निर्माण समझी से लदे दो पोतां को रवाना भी किया गया। सरकार का कहना है कि जलमार्ग से परिचम बंगाल में इन कारों की लागत पांच हजार रुपए तक कम हो जाएगी। राष्ट्रीय जल मार्ग-1 का विकास जल मार्ग विकास परियोजना के जरिए किया जा रहा है। इसकी फटिंग विषय बैंक द्वारा की जा रही है। इस पर कुल बयालीस सौ करोड़ रुपए की लागत आएगी। सरकार ने यह भी कहा है कि नदी तटों के विकास पर साढ़े पांच सौ से सात सौ औरब रुपए खर्च होंगे। जल परिवहन में सड़क मार्ग के मुकाबले दुलाई की लागत पांच फीसद से भी ज्यादा घट जाएगी। अभी एक टन माल की दुलाई प्रति किलोमीटर सड़क मार्ग से 2.50 रु., रेल मार्ग से 1.36 रु. और जल मार्ग से 1.06 रुपए पड़ती है। इसके अतिरिक्त, जल मार्ग से दुलाई में प्रति टन किलोमीटर ईंधन की खपत भी कम हो जाएगी। सरकार का कहना है कि राष्ट्रीय जल मार्ग-1 जब समृद्ध हो जाएगा तब विमान की लैंडिंग भी युरु हो जाएगी, जिसके तहत गंतव्य तक तक रिवर ब्रेक पाया है। बजे होने में कम से कम एक घण्टा व रेल मार्ग वे छह फीसद विकास की शुरुआत वाराणसी, हर्ष टर्मिनल भी टर्निमल व पर्याप्त बनाया जाएगा। जलपोतों का चाहती है विद्युत आलीशान करना, कूज खरीदें भविष्य में सभी जो रन वे के ही यह अंदेशा भी जलमार्ग के लिए पहल मार्ग की अन्न चाहिए। अभी एक फंड जरूरी दिख नहीं रहा विद्युत ब्रेक रिवर फॉटं से टन किलोमीटर ईंधन की खपत भी अपनी वार्षिक पायी जाएगा लेकिन यह प्राकृतिक वह प्राकृतिक

गी। रो-रो सर्विस भी शुरू करने की योजना तैयार है। लेकिन लोग कार जैसे निजी साधनों के साथ सहजता से पहुंच सकेंगे। हालांकि अब नफारमेशन सिस्टम' विकासित नहीं हो रहा। इसकी कमी नहीं हुई तो यह सपना भी पूरा नहीं हो सकता। कम चार साल तो लग ही जाएंगे। सड़कों पर यह मुकाबले जल मार्ग से ढुलाई का खर्च बढ़ जाएगा। अभी तो राष्ट्रीय जल मार्ग से वाराणसी से हृदिया के बीच की गई है। दिया व झारखण्ड के साहबगंज में मलटी-लेवल बनाया जाएगा। पचास से ज्यादा छोटे-छोटे सरककां में छह सौ करोड़ की लागत से गेट बांध ताकि मालों की ढुलाई के साथ ही संचालन बख्ती किया जा सके। सरकार गंगा में न केवल मालवाहक बल्कि ज भी चलें। देश के बड़े उद्योगपति अपनी ओर और उसी कूज से गंगा में उतरें। निकट विकास कर ऐसा विमान भी खरीदना चाहती है। अलावा पानी में भी उत्तरेगा। लेकिन साथ ही कि अरबों-खरबों के निवेश के बावजूद रहीं दम न तोड़ दें। इस आशंका से उत्तरने का जरूरत यह है कि गंगा या राष्ट्रीय जल नदियों में पानी की मात्रा कम नहीं होनी चाही तो गंगा सफाई अभियान का हाल यह है कि स्वीकृत हुआ है लेकिन धरातल पर कुछ नहीं है। विदेशों की तर्ज पर देश की नदियों में बदलाव करने की योजना भी शुरू की जा चुकी है। नदी के किनारों का सौंदर्यकरण तो होनी चाही तो बरसात के दौरान लेती है व्यवस्था पूरी तरह से खत्म हो जाएगी।

ऐसे में नदी के अंदर पानी का संकट होना लाजिमी है। उदाहरण के लिए, साबरमती को देखा जा सकता है। इस नदी की औसत चौड़ाई 1253 फुट थी जो रिवर फ्रंट योजना के बाद 902 फुट रह गई है। नासा की रिपोर्ट पर गौर करें तो मालूम पड़ता है कि देश में जल स्तर 0.04 मीटर की दर से हर साल घिर रहा है। सबसे पहले तो इस जल स्तर को गिरने से रोकने की समुचित व्यवस्था करनी होगी। पिछले पंद्रह सालों से देश के 96 जलाशयों में पानी की उपलब्धता कम हुई है। केंद्रीय जल आयोग की रिपोर्ट के मुताबिक, इन जलाशयों की कुल क्षमता का अट्ठाईस से बत्तीस फीसद ही पानी बचा हुआ है। देश की पचासी फीसद पानी की जलस्तर को पूरा करने वाले भूमिगत जल का स्तर निरंतर घिर रहा है। नदी विशेषज्ञों का कहना है कि नदियों में न्यूनतम जल प्रवाह बनाए रखने के लिए सरकार को कानूनी प्रावधान भी करने चाहिए। नदी का पानी, विशेषकर गंगा का, हर माह ढाई हजार लीटर मैक्सिको, अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन और आस्ट्रेलिया जैसे देशों में जाता है। वर्ष 2012 में अमेरिका पहुंचे गंगा के पानी का वहाँ के वैज्ञानिकों ने अध्ययन किया तो पता चला कि उसमें प्रृथूषण की मात्रा काफी ज्यादा है। कपास, धान और गन्ना जैसी फसलों के लिए भारी मात्रा में पानी की जलस्तर पड़ती है। लेकिन इन फसलों के लिए पर्याप्त पानी उपलब्ध नहीं हो पाता है, जिसकी वजह से कई राज्यों में पिछले सात सालों से सूखे की स्थिति है। उत्तराखण्ड स्थित पंतनगर कृषि अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों के मुताबिक किसानों को सलाह दी जा रही है कि जल संकट को देखते हुए किसान उन फसलों पर ज्यादा ध्यान दें जिनमें पानी की आवश्यकता कम पड़ती है। सरकार पहले नदियों में मानक के मुताबिक पानी की व्यवस्था तो करे।

रोटी की जद्दोजहद



भूख आज भारत की सबसे बड़ी समस्या बनी हुई है। हर साल भुखमरी की व्यापकता नए आंकड़ों के रूप में सबके सामने आ जाती है। दुनिया भर की भुखमरी सूचकांक की हर वर्ष जारी होने वाली सूची में साल दर साल निरंतर आती हुई गिरावट भी भारत में फैली भूख की खा पा रही है तो उन्हें दूसरे वक्त फाँके करने पड़ रहे हैं। एक ओर लोगों ने महामारी से राहत पाई तो दूसरी ओर अनेक लोगों की नौकरियां भी हाथों से निकल गई हैं। बिना काम के, बिना पैसों के, देश में अनेक ऐसे परिवार हो गए हैं, जो भुखमरी की मार झेल रहे हैं।

बीमारी की कहानी बयां करती है। बढ़ती जनसंख्या हरेक व्यक्ति की, हरेक परिवार की प्राथमिक आवश्यकताओं तक की पूर्ति सही तरीके से नहीं कर पा रही है, जिससे भुखमरी की समस्या गंभीर स्वरूप लेती जा रही है। कुछ साल पहले तक लोग कड़ी मैहनत के बाद दो वर्क्ट की रोटी सुकून से खा लिया करते थे, अब उनके लिए रोजाना बढ़ती महंगाई ने दो जून की रोटी के लाले पैदा कर दिए हैं। देश की बड़ी आबादी खाने-पीने की महंगी होती हरेक चीज के चलते एक वक्त का खाना अपने नसीब से ऐसी परिस्थितियों में राज्य सरकारों का दायित्व बन जाता है कि भूख और कुपोषण से पीड़ित आबादी को उपयुक्त भोजन मुहैया करवाए। सामुदायिक भोजनालयों-कैंटीनों के जरिए केरल, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, ओडिशा, तेलंगाना, कर्नाटक आदि राज्यों में इस दिशा में रोजाना जो भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है वह सराहनीय है। इसी तर्ज पर देश के अन्य उन क्षेत्रों में जहां भुखमरी अधिक है, सरसा और पौष्टिक भोजन स्थानीय सरकारों को शुरू करने की पहल कर भुखमरी की समस्या के निदान

के प्रयासों में तेजी लानी होगी। आजाद भारत में कुपोषण और भुखमरी से मुक्ति के नाम पर घोषित और पोषित योजनाएं अनेक बार भट्ट तंत्र में आधी-अधूरी अधर में लटक जाती हैं या फिर पूरी तरह से हवा-हवाई हो जाती हैं। समस्या को हल करने के बजाय अक्सर ये योजनाएं खराब कियान्वन और अक्षम व्यवस्था की भेट चढ़ जाया करती हैं, जिसका खामियाजा बहुत बड़े वर्ग को भुगतना होता है। भुखमरी की समस्या को निपटाने के लिए देश में जरूरी धन और संसाधनों की कोई कमी नहीं है। इस समस्या को मिटाने की मंशा बनाने के साथ आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण में बदलाव की सख्त जरूरत है। मजबूत झड़ांचे के साथ किया गया कोई कार्य विफल नहीं होता है तो फिर भुखमरी की समस्या का निपटान भी दृढ़ता के साथ किया जा सकता है।

गाया था, जबकि मां की ममता से जुड़ी होने के कारण लोरी आमतौर पर महिला स्वरों में ही पसंद की जाती है। आशा भौंसले ने भी 1950 में ही फिल्म वचन में 'चंदा मामा दूर के/ पुए पकाएं बूर के/ आप खाएं थाली में/ मुन्ने को दें घ्याली में' गाकर बच्चों को एक खूबसूरत, सदा जवान लोरी की भेंट दी थी। बच्चों की पकड़ में आसानी से आ सकें

अ ब अक्सर ऐसा होता है कि नींद पलकों के साथ आंख-मिचौनी खेलती रहे और मन अतीत की गहराइयों में डूब जाए। सूरदास की पवित्रियां याद आती हैं- 'यशोदा हरी पालने झुलावें, हलरावें दुलराएं, मलहरावें, जोई सोई कुछ गावे'। फिर लोरियों के संसार में मुस्कराता हुआ अपना शैशव याद आने लगता है, जब माँ मीठे स्वर में नींद से अनुनय करती थी- 'आ जा री आ, निदिया तू आ, झिलमिल सितारों से उतर, आंखों में आ सपने सजा।' अमर फिल्म 'दो बीघा जमीन' की यह लोरी नींद से बोझिल पलकों पर लयात्मकता का रिनग्ध चुंबन जड़ देती थी। माँ के सान्निध्य को देर तक महसूस करने की लालच में आंखें नींद से विद्रोह करती थीं तो उन्हें हौले से मूँद कर स्वाञ्जलोक में विचरने के लिए भेज देती थीं उनकी लालियां। उनकी दूसरी प्रिय लोरी थी उन्हीं दिनों की बेहद सफल फिल्म 'अलबेला' में लता मंगेशकर की गाई लोरी 'धीरे से आ जा री अखियन में, निदिया आ जा री आ जा।' गीतकार राजेंद्र कृष्ण की इस लोरी के छोटे छंद में छोटी-छोटी लहरों-सा शांत बहाव था और बाल मन को रिङ्गाने वाले शरारती भाव भी- 'तारों से छुप कर तारों से चोरी/ देती है रजनी चंदा को लोरी/ हंसता है चंदा भी निन्दियन में/ निदिया आ जा री, आ जा।' 'निदियन' और 'गलियन' जैसे छोटे, सरल और मीठे शब्द हीं तो लोरी को बड़ी की कविता से अलग एक विशिष्ट हफ्चान देते हैं। लहर-लहर बहते स्वर, जिनमें अधिक उतार-चढ़ाव न हों। प्रवाह हो, लेकिन आंदोलन न हो, लोरी में सम्मोहन भरते हैं। आगे चल कर 1977 में छोटे छंद की एक और लोरी बहुत लोकप्रिय हुई। फिल्म 'मुकित' की आनंद बकशी रचित इस लोरी के शब्द थे- 'लल्ला लल्ला लोरी/ दूध की कटोरी/ दूध में बताशा/ मुन्नी करे तमाशा।' सहज, सरल और साक्षिप्त शब्दों वाली इस लोरी की एक और विशेषता थी कि लता के अतिरिक्त इसे गायक मुकेश ने भी गाया था, जबकि माँ की ममता से जुड़ी होने के कारण लोरी आमतौर पर महिला स्वरों में ही पसंद की



जाती है। आशा भौंसले ने भी 1950 में ही फिल्म वचन में 'चंदा मामा दूर के/ पुरे पकाएं बूर के/ आप खाएं थाली में/ मुन्जे को दें प्याली में' गाकर बच्चों को एक खूबसूरत, सदा जवान लोरी की भेंट दी थी। बच्चों की पकड़ में आसानी से आ सकें, इसलिए लोरी के स्वरों में अधिक उत्तार-चढ़ाव नहीं होता। वह शांत रस का एक अद्वृत रेखमी जाल बुनती है। शिशु मन उस जाल में फंस कर मछली की तरह तड़पता नहीं, न उससे मुक्त होने का प्रयास करता है। इतना स्निघ्न होता है लोरी का संगीत कि उसके सम्मोहन के जाल से हौले-हौले फिसल कर अनायास ही शिशु जीद के आगोश में चला जाता है। मां अगर शिशु को अपने अंक में बांधती है तो लोरी माँ और शिशु दोनों को अपने अंक में भर कर एक कर देती है। लैकिन लोरी शिशुओं के लिए केवल नींद की दवा नहीं होती। मानसिक विकास में एक महत्वपूर्ण कदम होता है संप्रेषण-भावों और शब्दों दोनों का। संप्रेषण की राह पर लोरी शिशु को सबसे पहले नन्हे डग भरना सिखाती है, जब वह लोरी के शब्दों को खुद तुलाते हुए दुहराता है। लोरी शिशु का परिचय उसकी सांस्कृतिक विरासत से भी कराती है। चंद्रमा को 'चंदा मामा' कहना विशृद्ध भारतीय संस्कृति की पहचान है। तभी आमतौर पर हर भारतीय भाषा की लोरी चंदा मामा को दूध का कठोरा लेकर आने को कहती है। फिल्म मिलन की सुमधुर लोरी 'राम करे ऐसा हो जाए, मेरी निदिया ताहे मिल जाए' शिशु के मन में यह उत्सुकता भी जगती होगी कि यह राम कौन है, जिनके किए कुछ भी हो सकता है। संसार की सभी भाषाओं में लारियां शिशु का परिचय उसकी सांस्कृतिक विरासत से कराती हैं। अंग्रेजी की प्राप्तिकृति किसमस कैरोल 'साइलेंट नाइट' लोरी की मिठास और क्रिसमस की भावुक संवेदना में स्वरों को गूँग्यकर शिशु का परिचय इंसाइयत से कराती है। उसी तरह अपनी सुख-सुविधा से पेरे जाकर दूसरों के लिए कुछ करने का पावन संदेश इन शब्दों से मिलता है कि 'मैं गाऊं, तुम सो जाओ, सुख सपनों में खो जाओ।' लोरी के सरल सहज शब्द छोटे-छोटे दुकड़ों में दोहराए जाकर बालक के खिलंदड़ी मन को एक बिंदु पर केंद्रित करके एकाग्र होना सिखाते हैं। आज के अत्याधिक परिवेश में घर-टप्टर के कार्यालय और सामाजिक कर्तव्यों से जूझती हुई मां के पास क्या अब भी लोरी सुना कर शिशु को निदिया की गोद में सौंपने का धीरज बचा है?

